Biju Patnaik

Biju Patnaik was born on March 5th, 1916, at Anand Bhawan in Tulasipur area of Cuttack. His father Laxminarayan Patnaik and his mother Ashalata Devi brought him up with high moral values.

When he was studying B.Sc. in Ravenshaw College he had great interest in Aeronautics and Industry. His dreams of becoming a pilot became a reality when he joined the Royal Indian Air Force and the Indian National Airways. Later he joined the Indian National Airways and became its ace pilot. In 1940, Patnaik came in contact with Loknayak Jayprakash Narayan and accepted him as his "Political Guru".Biju Patnaik's political career began during the Quit India Movement when he collaborated with underground leaders and was imprisoned for thirty months. During the Second World War, when Japan attacked Burma, Biju Patnaik risked his life while saving many British families. He also extended help to the Chinese rebels by flying over the Himalayan region. In 1947, during the Dutch-Indonesia war, Biju Patnaik was assigned the task of helping the first Prime Minister of Indonesia, Sultan Sahariyar, Md. Hatta and other freedom fighters fly across Rangoon from Jakarta to Delhi, which he carried out successfully. The first Indian Plane was landed by him in Kashmir in 1947 when Pakistan attacked India. On returning to Odisha as his place of work he took interest in establishment of industries. He became the President of UPCC for one term. Patnaik became the Chief Minister of Odisha on June 23rd, 1961. During his dynamic regime as the Chief Minister, Odisha witnessed remarkable transformations in the industry sector. Among many development milestones, Paradip port, Balimela Hydro-electric Project, Talcher Thermal Project, Sunabeda MIG Aircraft Factory, Barbil Sponge Iron Factory, NALCO Aluminium Project are specially important. Odisha State Electricity Board (1961), Odisha Industrial Development Corporation (1962), Odisha Small Industries Corporation (1961-1962) and many other corporations and boards were established by him. Grampanchayat Industrial Units established for industrial development in the rural areas were indeed a novel concept. Biju Patnaik is rightly called the founder of panchayat level industries in Odisha. During his tenure, Regional Engineering College and many Engineering and Polytechnic colleges were established. After resigning from the post of Chief Minister of Odisha he became the organizer of the Kamraj Yojana.

Biju Patnaik was honoured the highest civilian honour of Indonesia "Bhumi Putra" for his heroic contribution for that country. He was instrumental in the institution of the prestigious Kalinga Award in UNESCO which is conferred on eminent scientists every year. Sardar Patel's ideals motivated him to dedicate himself to the services of the common man. His entry into active politics began in 1946 when he was elected to the Bidhansabha from Cuttack constituency. Due to his efforts in May 1959 a Union Ministry was constituted under the leadership of Dr. H. K. Mahtab.On April 6th 1970, after separating from Congress Biju Patnaik constituted 'Utkal Congress'. Later in 1973 January 26th, Biju Patnaik formed the 'Pragati Dal'. In 1997, he was elected to the Lok Sabha and joined the cabinet as the Union Minister for Steel and Mines till 1979. He was re-elected to the Lok Sabha in 1980 and 1984 as a Janata Party candidate. In February, 1990 under his leadership Janata Party secured majority and then on March 5th 1990, his second term as the Chief Minister of Odisha began. Innovative programmes were introduced to eradicate poverty and unemployment in Odisha. He pioneered women emancipation in Odisha.

In 1995 Biju Patnaik became the leader of opposition. Later he contested for Lok Sabha election held in June 1996 from Aska and Cuttack constituencies. He was elected from both the constituencies, but he decided to represent Aska for the 11th Lok Sabha.

Biju Patnaik worked to take Odisha to the top in every sphere. He was the motivator of work culture. His straight-forwardness was his innate quality. His efforts in bringing about reforms in administration and capacity building will forever inspire his admirers.

Biju Patnaik passed away on 17th April 1997. He is survived by his wife Gyan Patnaik, two Sons, Prem and Naveen and one daughter Gita. Biju Patnaik's contributions to this country can never be forgotten.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Biju Patnaik.

Credits :

Text	: Based on the material received from proponent
Stamp/ FDC/Brochure	: Sh. Brahmprakash
Cancellation Cachet	: Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts
India

बीजू पटनायक BIJU PATNAIK
1916-2016

विवरणिका BROCHURE

बीजू पटनायक

बीजू पटनायक का जन्म 5 मार्च, 1916 को कटक के तुलसीपुर में आनंद भवन में हुआ था। उनके पिता श्री लक्ष्मीनारायण पटनायक तथा माता आशालता देवी ने बचपन से ही उनमें साहस, पराक्रम और दृढ़ विश्वास की प्रेरणा दी।

रेवेनशॉ कॉलेज में बी.एस.सी. की पढ़ाई करते समय उनकी रूचि वैमानिकी और उद्योग में हो गयी। विमान चालक बनने का उनका स्वप्न रॉयल इंडियन एयर फोर्स और इंडियन नेशनल एयरवेज में उनकी नियुक्ति होने पर पूरा हुआ। बाद में वे इंडियन नेशनल एयरवेज में शामिल हुए तथा उसके दक्ष पायलट बने। 1940 में पटनायक जी लोकनायक जयप्रकाश नारायण के सम्पर्क में आये तथा उनको अपने "राजनीतिक गुरू" के रूप में स्वीकार किया। बीजू पटनायक का राजनीतिक जीवन भारत छोड़ो आन्दोलन से शुरू हुआ, जब उन्होंने भूमिगत नेताओं को सहयोग दिया और इस कारण उनको 30 मास की जेल की सजा हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जब जापान ने बर्मा पर आक्रमण किया, तब बीजू पटनायक ने अपनी जान की परवाह न कर कई अंग्रेज परिवारों की रक्षा की। हिमालय के ऊपर उड़ान भरकर उन्होंने चीन के विद्रोहियों की भी सहायता की थी। 1947 में डच–इंडोनेशिया युद्ध में उन्हें इंडोनेशिया के प्रथम प्रधानमंत्री, सुलतान शहरयार, मुहम्मद हाता तथा अन्य स्वतंत्रता सेनानियों की मदद के लिये रंगून होते हुए जकार्ता से दिल्ली तक की उड़ानें भरने का कार्य सौंपा गया, जो उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया। 1947 में जब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया तब कश्मीर में उन्होंने पहली बार भारतीय विमान उतारा। अपनी कर्मभूमि, ओडिशा लौटने पर उन्होंने उद्योग स्थापित करने पर ध्यान दिया। वे एक कार्यकाल के लिए ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष भी बने। 23 जून, 1961 को वे ओडिशा के मुख्यमंत्री बने। ओडिशा के मुख्यमंत्री के रूप में उनके प्रभावशाली नेतृत्व में ओडिशा में अभूतपूर्व औद्योगिक परिवर्तन हुए। उनके कार्यकाल की विकासात्मक उपलब्धियों में पारादीप बन्दरगाह, बालिमेलाजल–विद्युत परियोजना, तालचर ताप–विद्युत परियोजना, सूना बेड़ा में मिग विमान कारखाना, बड़बिल में स्पंज लोहा उद्योग, नालको अल्युमिनियम परियोजना विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने ओडिशा राज्य विद्युतबोर्ड(1961), ओडिशा औद्योगिक विकास निगम (1962), ओडिशा लघु उद्योग निगम (1961–62) तथा अन्य कई निगम और बोर्ड स्थापित किए। ग्रामीण क्षेत्रों के औद्योगिक विकास के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर औद्योगिक इकाइयां स्थापित कीं जो कि एक नवीन संकल्पना थी। बीजूपटनायक को ओडिशा में पंचायत स्तर पर उद्योगों का संस्थापक कहा जाता है। उनके कार्यकाल के दौरान क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कालेज तथा कई इंजीनियरिंग तथा पॉलिटेक्निक कालेज स्थापित किए गए। ओडिशा के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद वे कामराज योजना के संचालक बने।

इंडोनेशिया में प्रदान की गई साहसिक सेवाओं के लिये, बीजू पटनायक को वहां का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भूमिपुत्र" से सम्मानित किया गया। प्रतिवर्ष विख्यात वैज्ञानिकों को दिए जाने वाले "यूनेस्को" के सम्मानित "कलिंग पुरस्कार" स्थापित किए जाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। सरदार पटेल की प्रेरणा से बीजूबाबू ने अपने को जनसाधारण की सेवा में समर्पित कर दिया। सक्रिय राजनीति में उनका प्रवेश 1946 में हुआ, जब वे कटक विधानसभा के लिये चुने गये। उनके प्रयासों से मई 1959 में डा. एच. के. महताब के नेतृत्व में संयुक्त सरकार बनी। 6 अप्रैल, 1970 को कांग्रेस से अलग होने पर बीजूबाबू ने "उत्कल कांग्रेस" की स्थापना की। बाद में 26 जनवरी, 1973 को बीजू पटनायक ने "प्रगतिदल" की स्थापना की। 1977 में वह लोकसभा के लिये चुने गये और केन्द्रीय इस्पात एवं खान मंत्री के रूप में 1979 तक कैबिनेट के सदस्य रहें। 1980 एवं 1984 के लोकसभा चुनावों में वह जनता पार्टी के प्रत्याशी रूप में पुनः चुने गये। फरवरी, 1990 में उनके नेतृत्व में जनता दल पार्टी को बहुमत मिला और तब 5 मार्च, 1990 को ओडिशा के मुख्यमंत्री के रूप में उनके दूसरे कार्यकाल की शुरूआत हुई। उनकी सरकार 1995 तक 5 वर्ष तक चली। ओडिशा में गरीबी और बेरोजगारी दूर करने के लिए कई नवीन योजनाएं आरंभ की गईं। उन्होंने ओडिशा में नारी उत्थान का सूत्रपात किया।

1995 में बीजू पटनायक विपक्ष के नेता बने। इसके बाद जून, 1996 के लोकसभा चुनाव में वे आस्का तथा कटक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव में खड़े हुए और दोनों ही लोक सभा क्षेत्रों में निर्वाचित हुए। परन्तु ग्याहरवीं लोकसभा के लिए उन्होंने आस्का का प्रतिनिधित्व करने का निर्णय किया।

बीजू पटनायक ने ओडिशा को हर क्षेत्र में उन्नत बनाने का संकल्प लिया था। वे कार्य संस्कृति के उत्प्रेरक थे। स्पष्ट वादिता उनका एक सहज गुण था। प्रशासन में सुधार लाने तथा क्षमता का विकास करने संबंधी उनके प्रयास, उनके करोड़ों प्रशंसकों को सदा प्रोत्साहित करते रहेंगे।

बीजू पटनायक का देहान्त 17 अप्रैल, 1997 को हुआ। उनके परिवार में उनकी पत्नी ज्ञान पटनायक, दो पुत्र प्रेम तथा नवीन और पुत्री गीता हैं। देश के लिए बीजू पटनायक का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

डाक विभाग बीजू पटनायक पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री ब्रह्मप्रकाश

विरुपण : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	6.065 लाख
Stamps Printed	:	6.065 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00